पाठ-2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (MODULE-3)

गत अंक से आगे **काव्यांश – 5**

तुम्ह तौ कालु ---------- होतेउँ श्रम थोरे ॥
गाधिसुनु कह ह्रदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ ।
अयमय खांडे न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥
(क्षितिज भाग-2 , पृष्ठ सं. 14)

शब्दार्थ :- कालु-मृत्यु । मोहि लागि-मेरे लिए । सुधारी-ठीक करते हुए । कटुबादी-कड़वे वचन बोलने वाला । बधजोगु-मरने योग्य । मरनिहार-मरने वाला । गनहि-गिनाते हैं । अकरुण-करुणाहीन । उरिन-ऋण से मुक्त । अयमय-लोहे से बना । खांड-तलवार/गन्ने के रस से बना मीठा पदार्थ । अबूझ-नासमझ ।

काव्यांश - 6

कहेउ लखन ---------- लखनु निवारे ॥

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ॥

(क्षितिज भाग-2 , पृष्ठ सं. 14)

शब्दार्थ :- बिदित- जानता है । काढ़ा-निकालना । आनिअ-ले आओ । ब्यवहरिआ-हिसाब करने वाला । नृपद्रोही-राजाओं के शत्रु । सयनहि-आँखों के संकेत से । नेवारे-मन कर दिया । कृसानु-आग । रघुकुलभानु-रघुकुल के सूर्य अर्थात राम ।

विशेष

1 काव्य में अवधी भाषा की छटा दर्शनीय हैं ।
2 भाषा में भावानुकूलता,प्रवाहमयता तथा पात्रानुकुल सम्बन्धी विशेषताएँ देखने योग्य है ।
3 काल को हाँककर बुलाने जैसे वाक्य से व्यंग्योक्ति द्वारा परशुराम की खिल्ली उड़ाई गई है ।
4 रचनागत सौन्दर्य :- अनुप्रास – ब्याज बढ़ बाढ़ा
उपमा – लखन उतर आहुति सरिस , जल सम बचन
5 रूपक – रघुकुल भानु , भृगुबर कोपकृसानु
आदि अलंकारों का सुन्दर चित्रण किया गया है ।
6 चौपाई तथा दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग किया गया है ।